तमाशा बुक्स
3
उछलती-कूदती,
भोली-सी है मिट्ज़ी! पर
जानती है निभाना दोस्ती ...
जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ... ?
बच्चों के लिए
कथा की किताब
ISBN 978-81-89020-87-3
9 788189 020873
www.katha.org
रु. 75/-
मिट्ज़ी
कावेरी डी
चित्राँकनः अतनु रॉय

..............................

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ैंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

## अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए

**बड़े उद्देश्य शृंखला** – इस शृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

**मिट्ज़ी** जगाती है मानव और प्रकृति के अटूट बंधन और सच्ची दोस्ती को। इस कहानी की सरल एवं काव्यात्मक शैली पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। पर्यायवाची शब्दों का बोध कराएँ।

# मिट्ज़ी
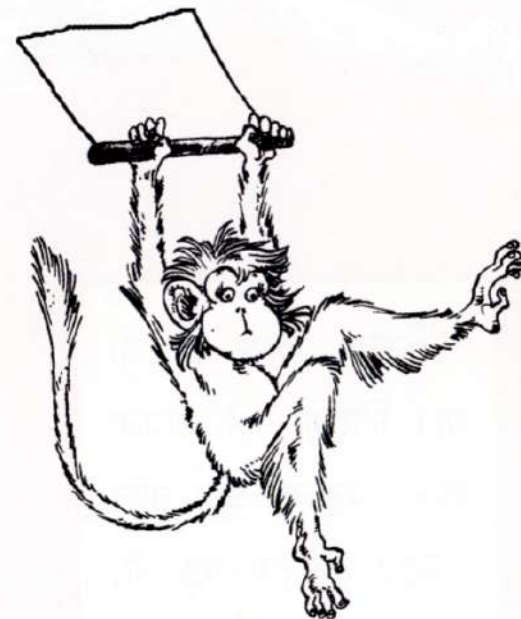
कावेरी डी

चित्राँकनः अतनु राय

क
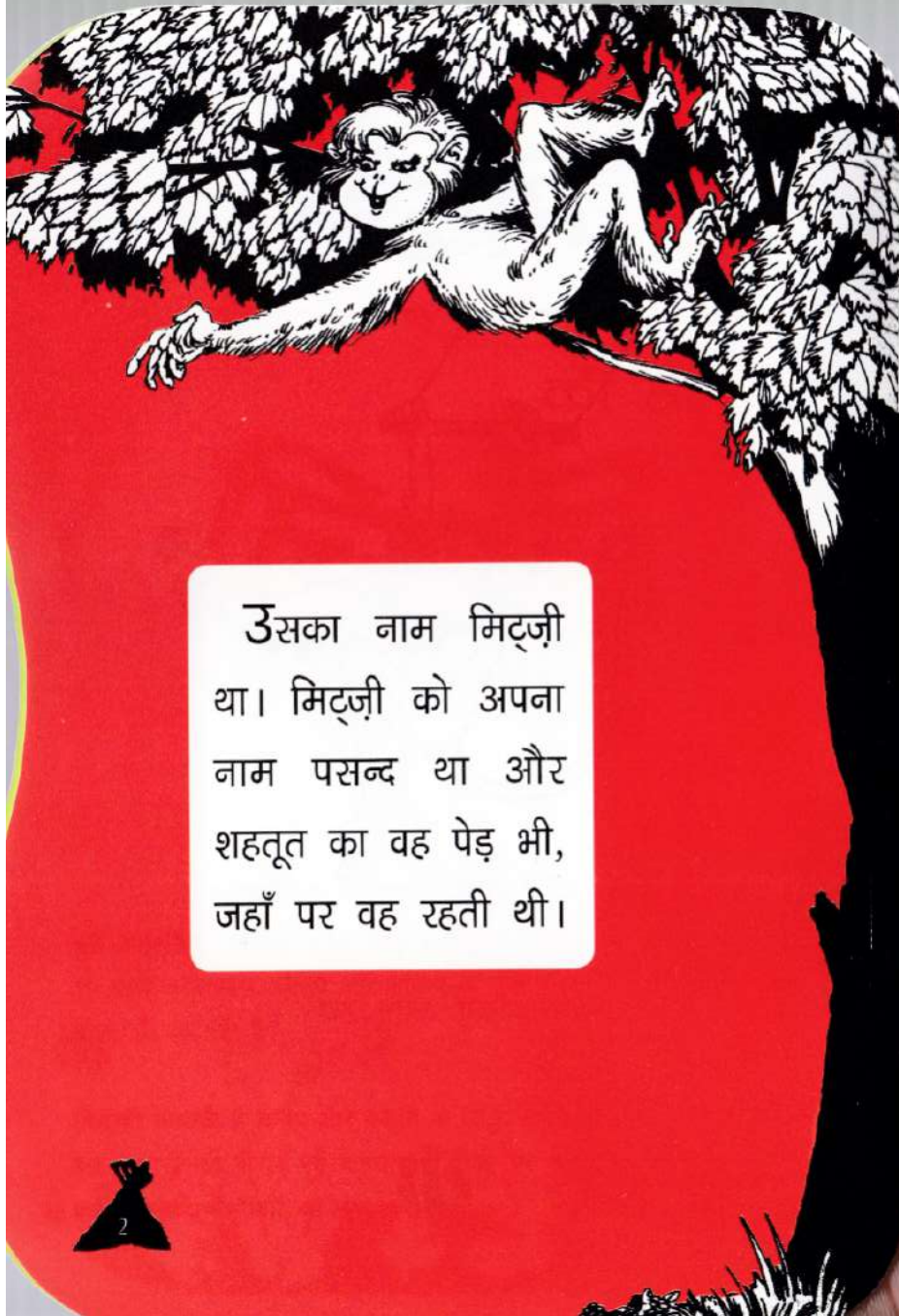
उसका नाम मिट्ज़ी था। मिट्ज़ी को अपना नाम पसन्द था और शहतूत का वह पेड़ भी, जहाँ पर वह रहती थी।
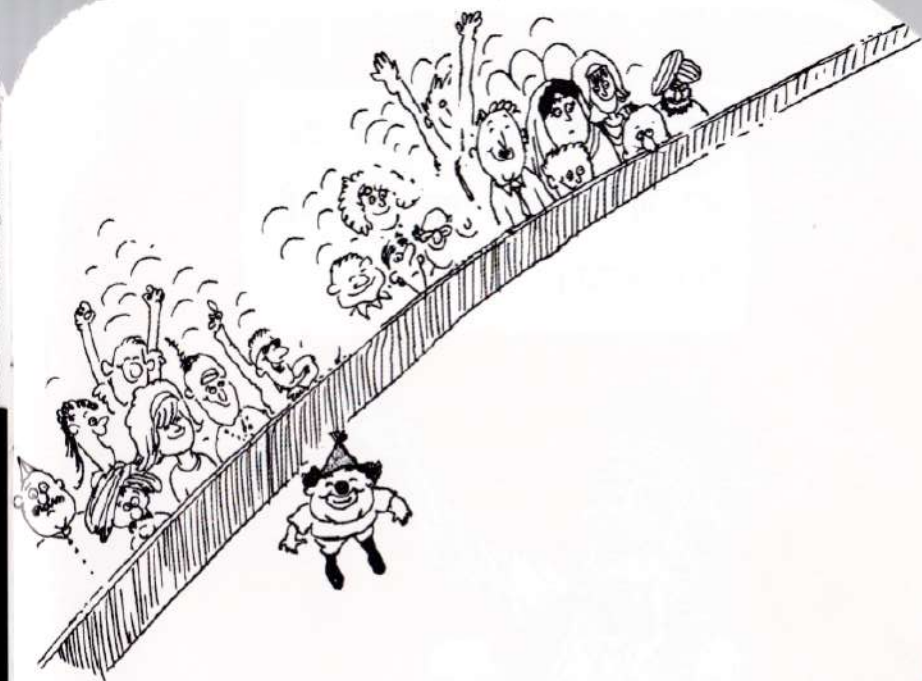


एक दिन मिट्ज़ी के गाँव में मिनमिनी सर्कस आया।
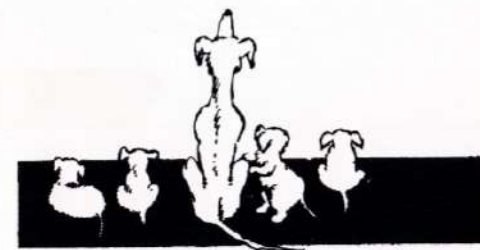
एक अंधा भिखारी, जो दिन भर गाता रहता था, वह भी वहाँ आया।
उसकी आवाज़ मिट्ज़ी को नन्हे पत्थरों पर कलकल बहती नदियों की, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से हँसते-कूदते झरनों की और पेड़ों के बीच सरसराती हवा की याद दिलाती थी।

एक दिन भिखारी ने मिट्ज़ी को पुकारा “बंदरिया!” फिर अपने हाथ से बासी रोटी का एक टुकड़ा, उसकी ओर प्यार से बढ़ा दिया। दोनों दोस्त बन गए।
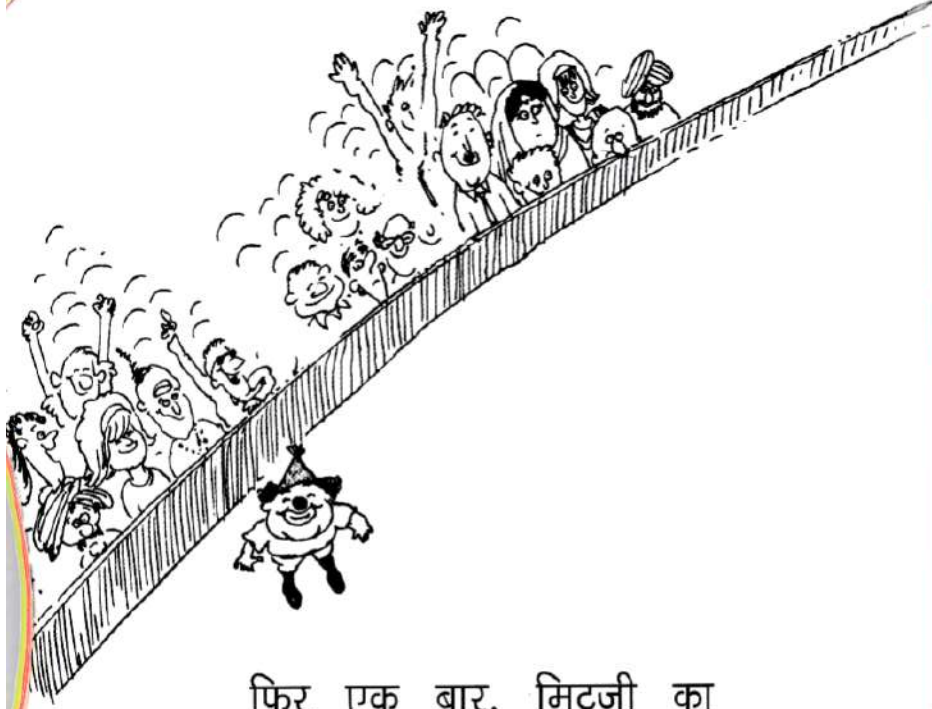
फिर एक बार, मिट्ज़ी का दोस्त उसे सर्कस ले गया। वहाँ उसे कलाबाज़ों को झूलों पर झूलते देखकर, उसे ऐसा लगा,





मानो शहतूत के पत्तों पर झीनी-झीनी धूप नाच रही हो। जैसे उसके मित्र का संगीत साकार हो गया हो!

"काश ...!" मिट्ज़ी ने सोचा, "मैं भी ऐसा कर पाती!" और उसी दिन से, उसने अपने मित्र की धुनों पर, एक डाल से दूसरी डाल तक, कलाबाज़ी का अभ्यास करना शुरू कर दिया।

कई बार वह गिरी भी, लेकिन रुकी नहीं!
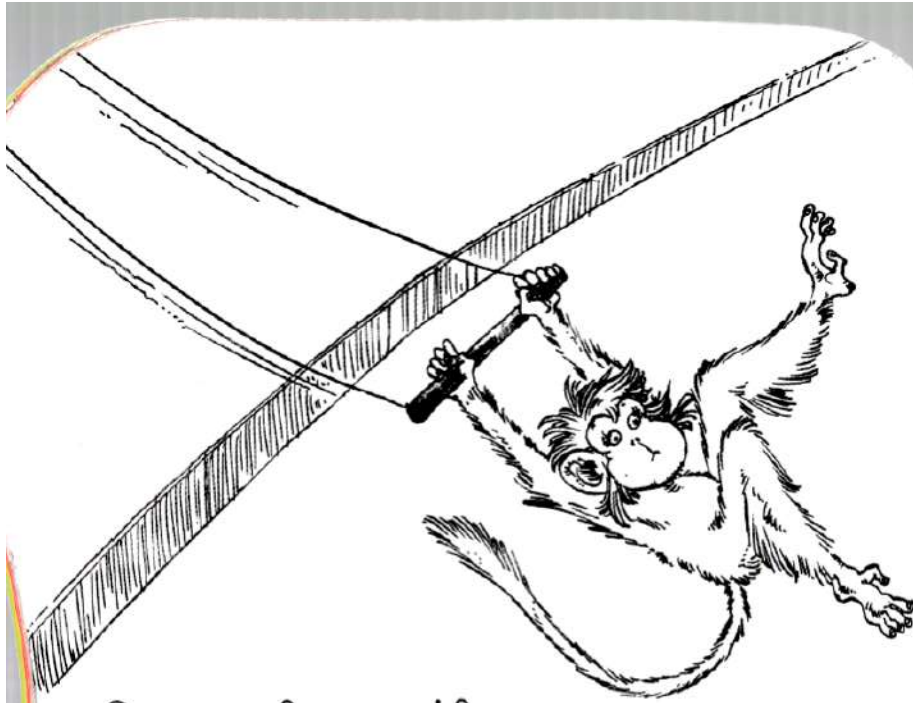
दिसम्बर की एक ठंडी रात को, सर्कस का तम्बू ख़ाली और सुनसान पड़ा था।

मिट्ज़ी ने वहाँ देर तक अभ्यास किया और फिर वहीं, छत के पास रखे कलाबाज़ों के बक्से पर, थक कर सो गई।

मिट्ज़ी की आँख तब खुली जब बत्तियाँ जल उठीं।

फिर नींद में ही मिट्ज़ी ने झूले को पकड़ा और सरसराती हुई हवा में झूल गई!

"बहुत खूब!" लोग पुकार उठे, "अरे वाह!"

जैसे ही शो समाप्त हुआ, मिनमिनी सर्कस का रिंग मास्टर उसके पास आया।

"बंदरिया, क्या तुम हमारे साथ काम करोगी?" उसने पूछा।

कुछ ही दिनों में, अपने दोस्त के संगीत पर करतब दिखाते-दिखाते, मिट्ज़ी मिनमिनी सर्कस की नामी कलाबाज़ बन गई!

फिर वह दिन भी आया जब सर्कस को वापस जाना था। "तुम किस्मतवाली हो, तुम्हें कुछ भी सामान नहीं बाँधना," अन्य कलाबाज़ों ने मिट्ज़ी से कहा।



मिट्ज़ी भी कुछ सामान बाँधना चाहती थी। पर क्या उसका दोस्त और शहतूत का पेड़, उसके साथ जा सकेंगे?

मिट्ज़ी का मन उदास हो गया।

अगले ही दिन सर्कस गाँव से चला गया। बस, वही अँधा आदमी वहाँ खड़ा रह गया, उसका डिब्बा आज ख़ाली था।

"मिट्ज़ी", उसने आह भरी, "तुम्हारी बहुत याद आएगी, मेरी नन्ही दोस्त!"

"क्या सर्कस लौट आया है ?" किसी ने पूछा।
"अरे नहीं," कोई बोला, "यह तो वह प्यारी-सी बंदरिया शहतूत के पेड़ पर करतब दिखा रही है!"
22

# बूझो तो जानें!

मिट्ज़ी की तरह हँसते-खेलते और फुर्तीले रहना है तो, संतुलित भोजन में क्या-क्या खाना है, आगे दी गई पहेली में बूझो।

## दाएँ से बाएँ

1. हम देते हैं तुम्हें शक्ति दिन-भर की। हम मिलते हैं रोटी, ब्रेड, चावल जैसे खाने में।
4. हमें ढूँढ़ों फलों और सब्जियों में।
6. हर रोज़ आधा घंटा करने से बनोगे तुम चुस्त और तंदुरुस्त!
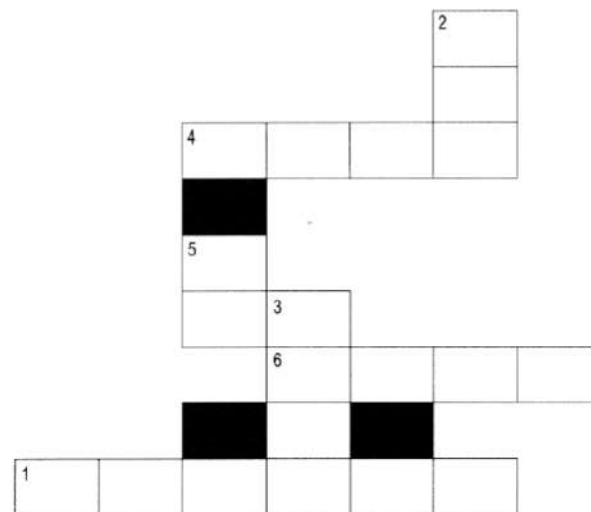
ऊपर से नीचे

2. हमें खाने से तुम होगे लंबे और बलशाली। हम मिलेंगे अंड़ों, मूँगफली और काजू, बादाम, सेम, लोबिया आदि में।

3. हमें अधिक मात्रा में न खाना! हम तुम्हें मोटा कर देंगे।

## पौष्टिक आहार

ताज़े फल

सूप, जूस, लस्सी

ताज़ी सब्जियाँ

5. तुम्हें इसे रोज़ 8-10 गिलास पीना चाहिए, पर पीना साफ़!
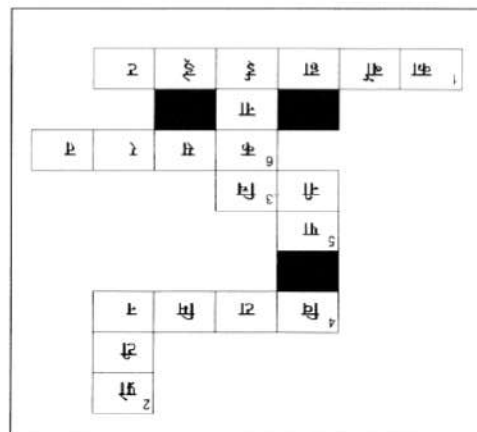
# ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे
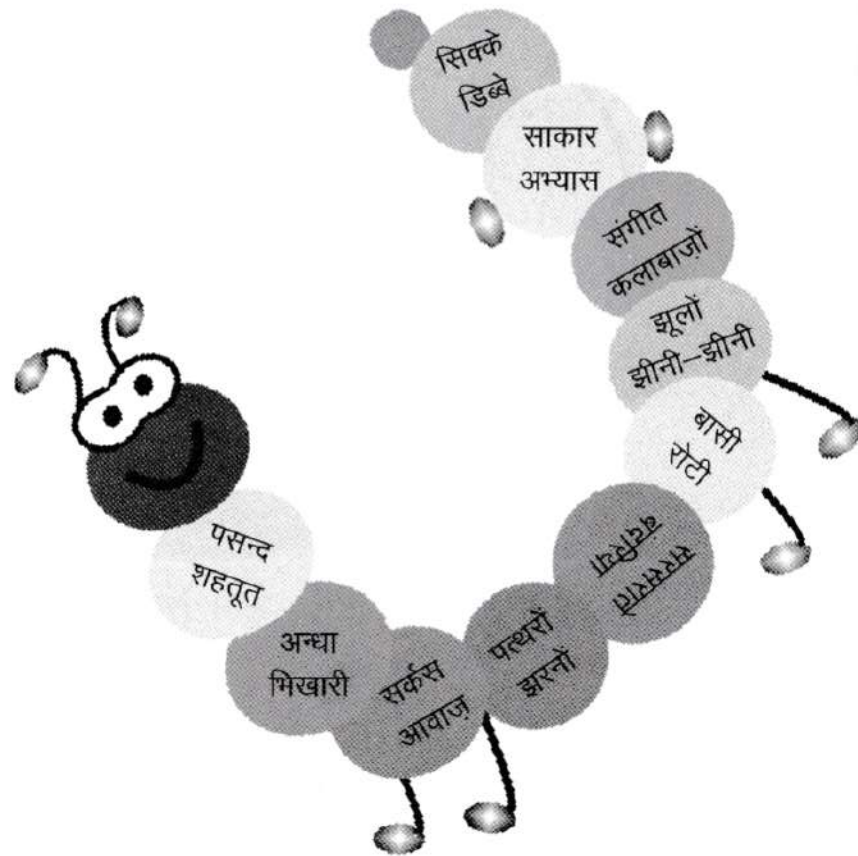
सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है। इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

## अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम

झट-पट सीखें अक्षर हम।
**200** दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

मेरी अगली कहानी

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
द्वितीय संस्करण, 2007, तृतीय संस्करण, 2009, चतुर्थ संस्करण, 2010



रेव इंडिया प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-87-3
संपादकीय टीम:
वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी


कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।


ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष 26524350, 26524511, फैक्स: 26514373
ई मेल: il@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org
प्रोडक्शन टीम:
प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार